रेचल कार्सन की किताब जिसने दुनिया बदली

लौरा बीइंगेसनर, चित्र : लॉरी लॉलर

अग्रणी पर्यावरणविद् रेचल कार्सन ने लिखा, "एक बार जब आप पृथ्वी के आश्चर्य और सुंदरता से अवगत हो जाएंगे तो आप उसके बारे में और जानना चाहेंगे." रेचल ने प्रकृति के अध्ययन के कई साहसिक तरीके खोजे. उन्होंने कोरल रीफ्स की जांच करने के लिए समुद्र में गोते लगाए और फ्लोरिडा एवरग्लेड्स में "ग्लेड्स बग्गी" पर सवार होकर मगरमच्छों को ट्रैक किया. हालांकि, उनके सबसे साहसी कामों में से एक था "साइलेंट स्प्रिंग" नाम की एक किताब लिखना और प्रकाशित करना. उस पुस्तक ने दुनिया को रसायनों और कीटनाशकों के खतरनाक प्रभावों से अवगत कराया. शक्तिशाली लोगों ने उस पुस्तक के प्रकाशन को रोकने की भरपूर कोशिश की, लेकिन रेचल और उसके प्रकाशक डटे रहे, और अंत में "साइलेंट स्प्रिंग" किताब एक बेस्ट-सेलर बनी जिसने लोगों को पृथ्वी पर कीटनाशकों से होने वाले हानिकारक प्रभावों से आगाह किया.

रेचल कार्सन की किताब

जिसने दुनिया बदली

लौरा बीइंगेसनर, चित्र : लॉरी लॉलर

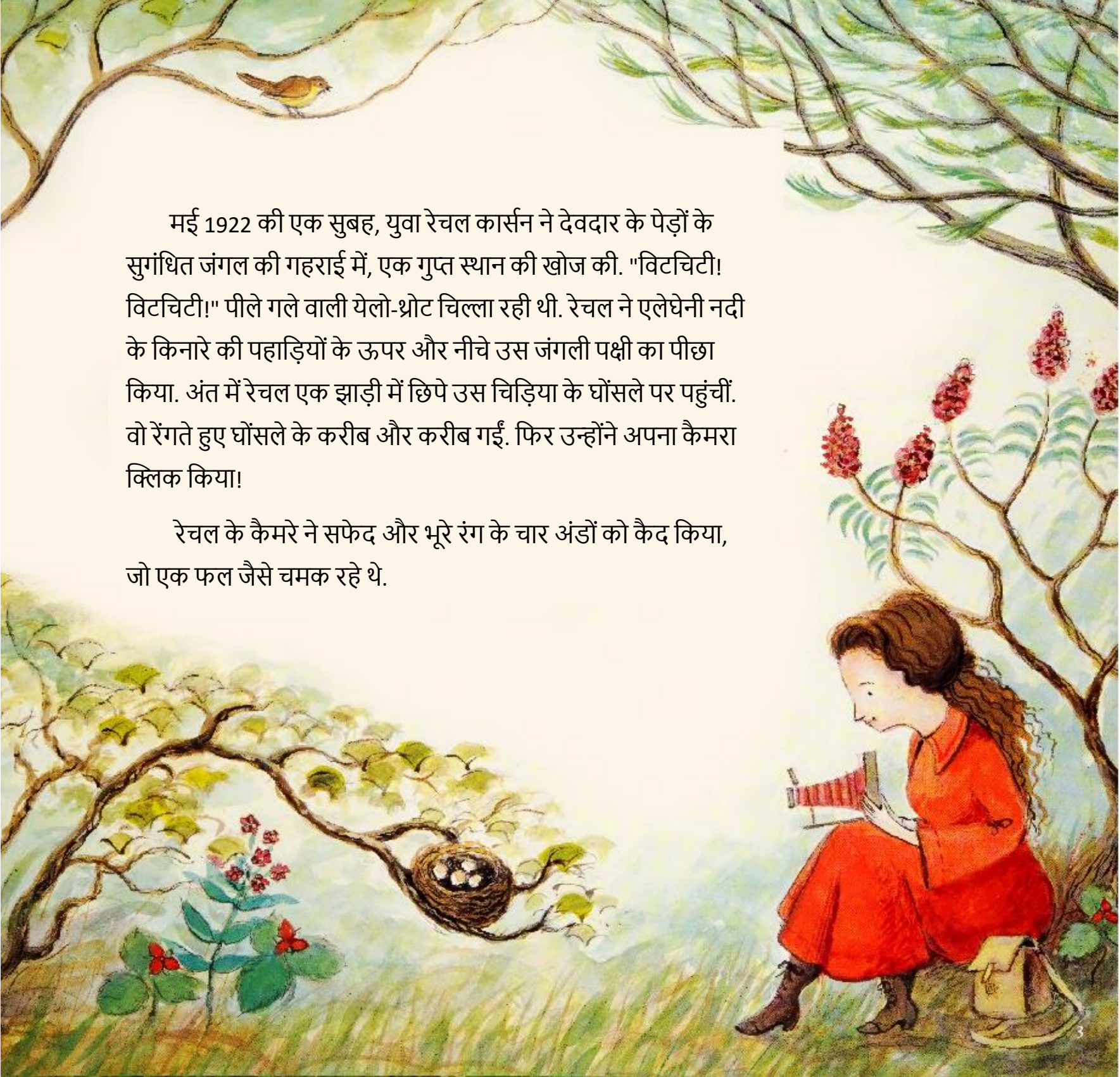

मई 1922 की एक सुबह, युवा रेचल कार्सन ने देवदार के पेड़ों के सुगंधित जंगल की गहराई में, एक गुप्त स्थान की खोज की. "विटचिटी! विटचिटी!" पीले गले वाली येलो-थ्रोट चिल्ला रही थी. रेचल ने एलेघेनी नदी के किनारे की पहाड़ियों के ऊपर और नीचे उस जंगली पक्षी का पीछा किया. अंत में रेचल एक झाड़ी में छिपे उस चिड़िया के घोंसले पर पहुंचीं. वो रेंगते हुए घोंसले के करीब और करीब गईं. फिर उन्होंने अपना कैमरा क्लिक किया!

रेचल के कैमरे ने सफेद और भूरे रंग के चार अंडों को कैद किया, जो एक फल जैसे चमक रहे थे.

रेचल कार्सन का सारा जीवन जिज्ञासु और दृढ़निश्चयी था.

उनका जन्म मई 27, 1907 को स्प्रिंगडेल के बाहरी इलाके में हुआ था.

स्प्रिंगडेल, पेंसिल्वेनिया राज्य में एक छोटा सा शहर था.

चूँकि उनके भाई और बहन उससे बहुत बड़े थे इसलिए पड़ोस के बच्चे कभी-कभार ही उनके घर आते थे.

इसलिए रेचल अक्सर अपने परिवार की पैंसठ एकड़ ज़मीन, जंगल, बगीचों और खेतों का मुआयना करने के लिए अकेले ही घूमती थीं.

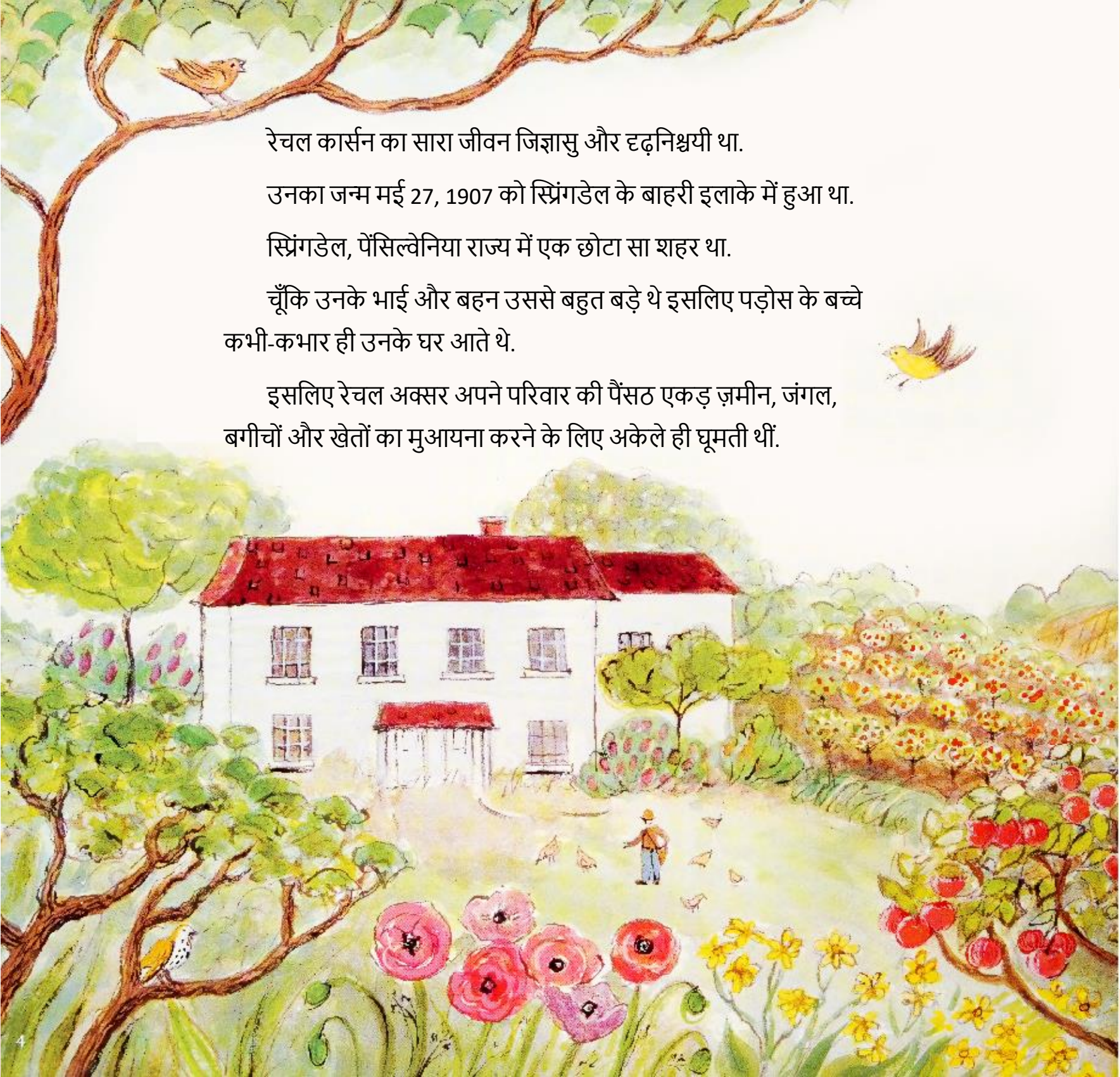

रेचल की प्यारी माँ को भी प्रकृति से प्रेम था.

माँ, तारों वाली रातों में रेचल को आकाश-दर्शन कराती, तारों के नाम बतातीं और वुड-थ्रश की आवाज़ को पहचानना सिखाती थीं.

रेचल लगातार पढ़ती थी और स्कूल में कड़ी मेहनत करती थी.

जब वो केवल ग्यारह वर्ष की थी, तो उसने एक बहादुर पायलट के बारे में एक कहानी लिखी जिसे एक पुरस्कार मिला. वो कहानी बच्चों की पत्रिका "सेंट निकोलस" में प्रकाशित हुई.

उसके बाद से रेचल ने एक लेखक बनने का फैसला किया.

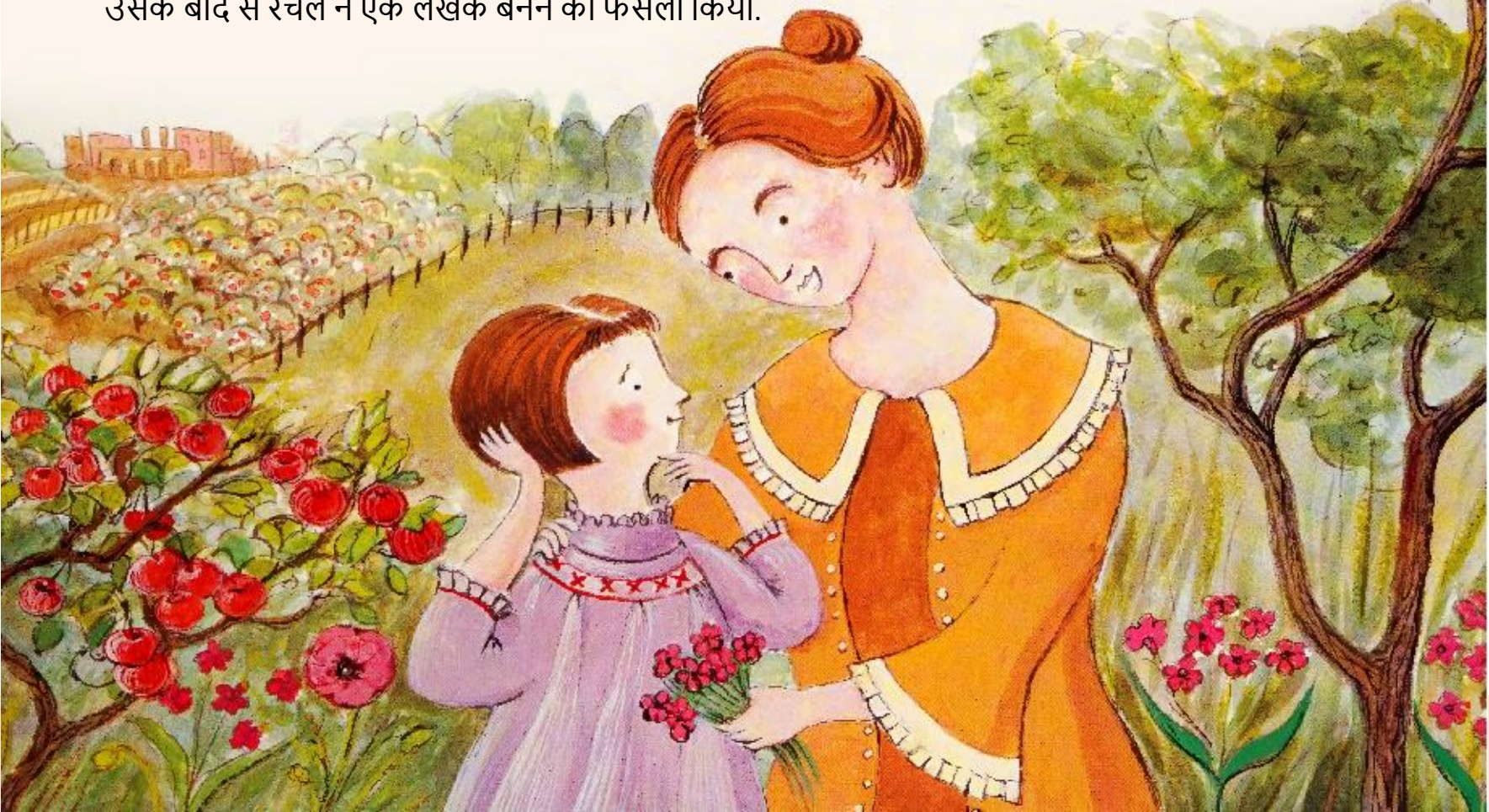

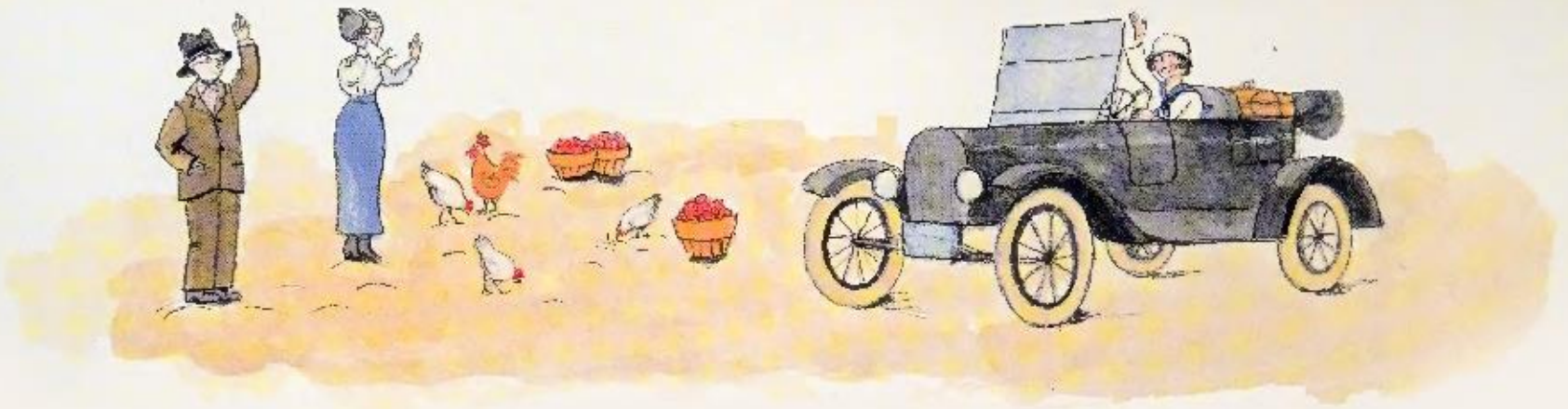

वो समय बहुत कठिन था. रेचल के पिता ने एक सेल्समेन थे. उन्हें जीवनयापन करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता था. रेचल की बेहद गर्वीली मां पियानो सिखाती थीं. उन्होंने कमाई बढ़ाने के लिए अपने छात्रों की संख्या दोगुनी कर दी. उन्होंने सेब, मुर्गियां - यहां तक कि पारिवारिक के प्रिय कप-प्लेटों को भी बेच दिया ताकि रेचल को पिट्सबर्ग के पेंसिल्वेनिया कॉलेज फॉर विमेन (जिसे बाद में चैथम कॉलेज नाम दिया गया) भेजने में मदद मिले.

जब रेचल को अकादमिक छात्रवृत्ति मिली तो वो एक उधार की मॉडल-टी मोटरकार में चढ़ी और उसने अपने परिवार से अलविदा कहा.

शर्मीली रेचल के लिए कॉलेज एक नई दुनिया थी. उसे लेखन कक्षाओं में बड़ा मज़ा आता था पर उसे पार्टियों और नृत्यों में अजीब सा महसूस होता था. जब हर कोई कार्नेगी म्यूजिक हॉल के संगीत कार्यक्रम में जाने की तैयारी कर रहा होता, तो रेचल पास के प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में स्टफ्ड पक्षियों का अध्ययन करने चली जाती थी.

लेकिन उससे उसके सामाजिक जीवन में कोई सुधार नहीं हुआ क्योंकि रेचल की कठोर मां लगभग हर सप्ताह के अंत में राचेल के कागजात टाइप करने के लिए उसके पास पहुँच जाती थी.

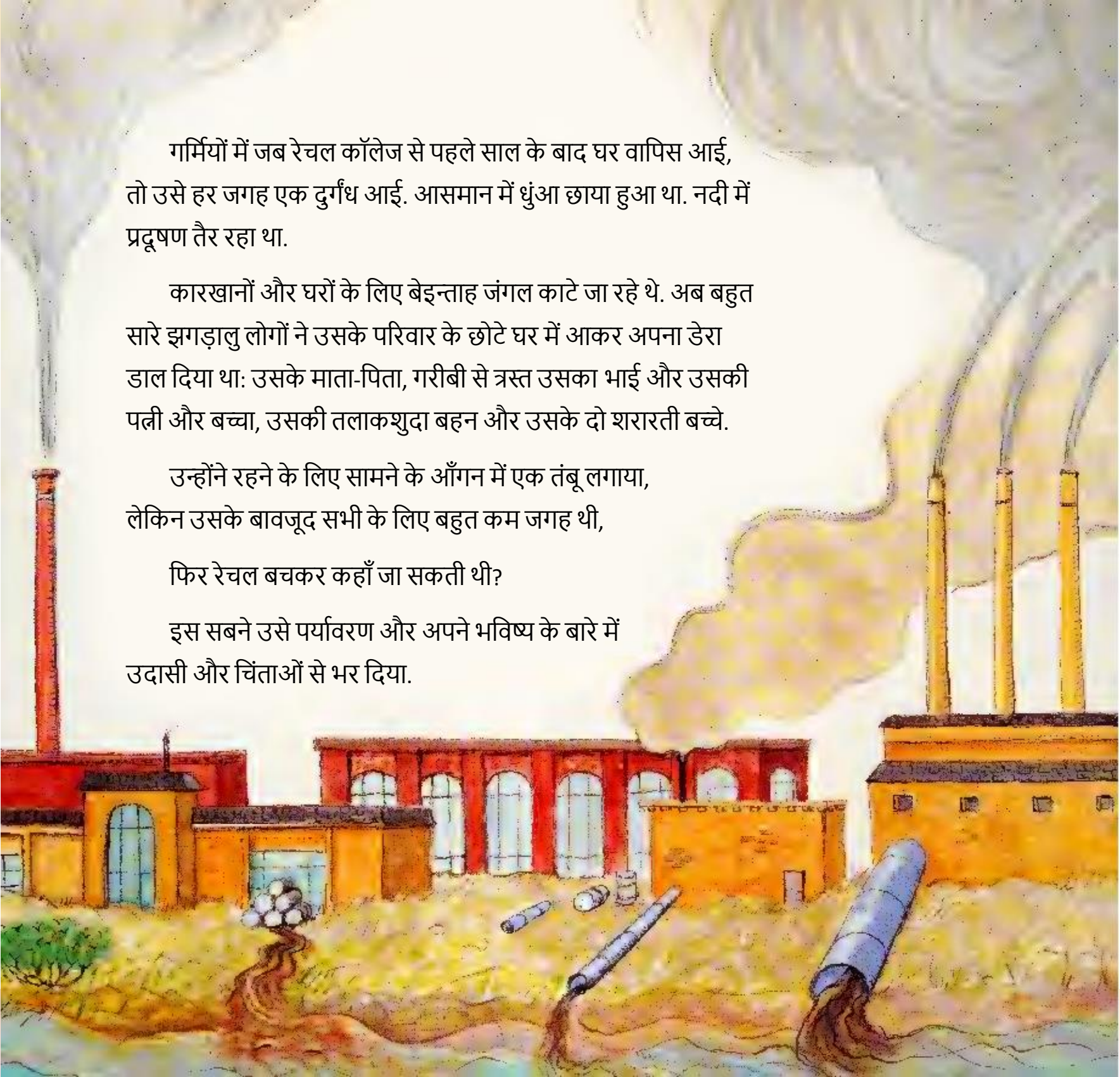

गर्मियों में जब रेचल कॉलेज से पहले साल के बाद घर वापिस आई, तो उसे हर जगह एक दुर्गंध आई. आसमान में धुंआ छाया हुआ था. नदी में प्रदूषण तैर रहा था.

कारखानों और घरों के लिए बेइन्ताह जंगल काटे जा रहे थे. अब बहुत सारे झगड़ालु लोगों ने उसके परिवार के छोटे घर में आकर अपना डेरा डाल दिया था: उसके माता-पिता, गरीबी से त्रस्त उसका भाई और उसकी पत्नी और बच्चा, उसकी तलाकशुदा बहन और उसके दो शरारती बच्चे.

उन्होंने रहने के लिए सामने के आँगन में एक तंबू लगाया, लेकिन उसके बावजूद सभी के लिए बहुत कम जगह थी,

फिर रेचल बचकर कहाँ जा सकती थी?

इस सबने उसे पर्यावरण और अपने भविष्य के बारे में उदासी और चिंताओं से भर दिया.

लेकिन जब वो कॉलेज लौटी, तो जीव-विज्ञान की टीचर मिस मैरी स्कॉट स्किंकर के जीवांत शिक्षण तरीकों से रेचल का जीवन ही बदल गया.

वो ऐसा समय था जब बहुत कम महिलायें ही विज्ञान को अपना कैरियर बनाती थीं. पर रेचल ने जीव-विज्ञानी बनने का मन बना लिया.

वो जानवरों और पौधों के बारे में बहुत कुछ सीखना चाहती थी.

वो जानती थी कि ग्रेजुएट स्कूल की फीस चुकाने के लिए वो कोई तरीका खोज लेगी.

फिर उसने जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए पूर्ण छात्रवृत्ति जीती.

ग्रेजुएट स्कूल शुरू करने से पहले की गर्मियों में, बाईस वर्षीय रेचल, वुड्स-होल, मैसाचुसेट्स की समुद्री जीव-विज्ञान प्रयोगशाला में अध्ययन करने के लिए गई.

जब वो पहली बार अटलांटिक महासागर के किनारे खड़ी हुई, तो वो पानी और आकाश की विचित्र दुनिया में पूरी तरह से खो गई. समुद्र का फेन किनारे से आकर टकरा रहा था. समुद्री पक्षी चिल्ला रहे थे. हवा में एक नमकीन गंध थी. और ज्वार-भाटे के कुंडों में फंसे कई रहस्यमयी जीव थे. समुद्र की लहरों के नीचे और कौन सा जीव छिपे होंगे?

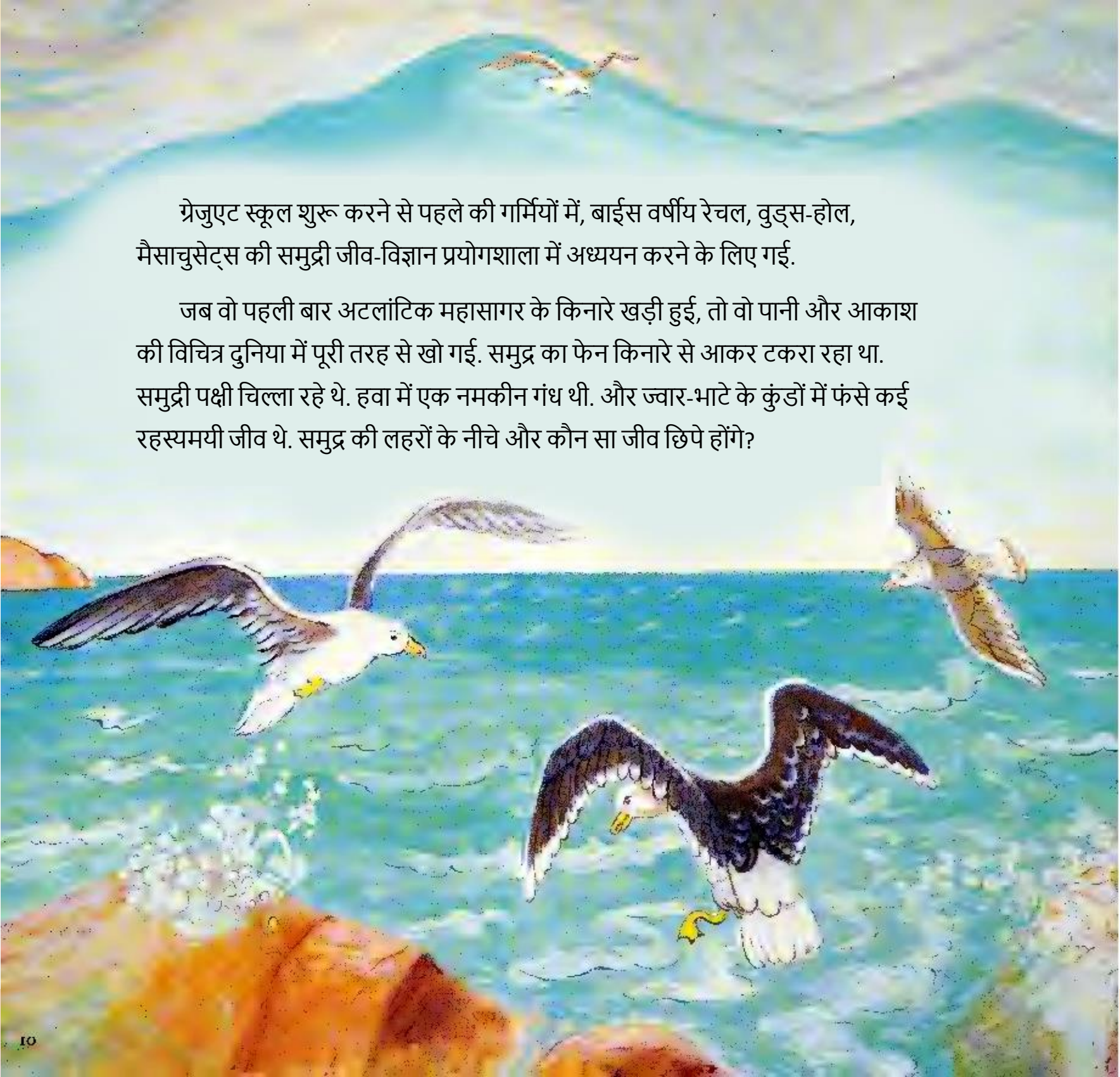

रेचल ने अपनी मास्टर डिग्री हासिल की. उसकी कक्षा में केवल कुछ मुट्ठी भर महिलायें ही थीं.

उस समय बड़े पैमाने पर बेरोजगारी फ़ैली थी. महामंदी के कारण उसने आगे की अपनी पढ़ाई जारी रखने की आशा छोड़ दी.

कोई भी एक महिला जीव-विज्ञानी को काम पर नहीं रखना चाहता था.

जब उसके पिता की मृत्यु हुई तब अट्ठाईस वर्षीय रेचल अपने परिवार को आर्थिक सहारा देने के लिए पैसे कमाने के लिए बेताब थी.

उसकी मां, बीमार बहन और दो युवा भतीजी, रेचल के मैरीलैंड घर में उसके पास ही रहते थे.

अख़बारों के लिए लेख लिखने और कुछ अंशकालिक नौकरियों से, बमुश्किल किराए और खाने-पीने के बिलों का भुगतान हो पाता था.

मैरी स्कॉट स्किंकर

फिर एक दिन रेचल अपनी पुरानी टीचर के पास सलाह लेने पहुंची.

सरकारी वैज्ञानिक बनने की परीक्षण में बैठो, मिस स्किंकर ने सुझाव दिया.

रेचल परीक्षा में प्रथम स्थान आई लेकिन फिर भी उसे कोई नौकरी नहीं मिली.

लेकिन उसने हार नहीं मानी. वो दरवाजे खटखटाती रही और अर्ज़ियाँ भेजती रही.

एक दिन मछली ब्यूरो के प्रमुख ने रेचल का इंटरव्यू लिया. क्षमा करें, कोई नौकरी नहीं है, उन्होंने कहा. हो सकता है कि रेचल समुद्री जीवन के बारे में उबाऊ रेडियो स्क्रिप्ट को ठीक करने में कुछ दिलचस्पी दिखाए? उससे पहले कई लेखकों ने कोशिश की थी पर वे असफल रहे थे.

"मैंने तुम्हारा लिखा एक शब्द भी कभी नहीं देखा," रेचल ने बाद में प्रमुख के शब्द याद करते हुए कहा, "लेकिन मैं फिर भी तुम्हें एक मौका दूंगा."

वो रेचल के लिए एक भाग्यशाली ब्रेक था. उसकी स्क्रिप्ट बेहद सफल हुईं.

उसके बाद रेचल को मत्स्य पालन ब्यूरो में एक जीव-विज्ञानी के रूप में पूर्णकालिक नौकरी मिली.

स्टाफ में केवल दो पेशेवर महिलायें थीं. रेचल उनमें से एक थी.

उसे रेडियो प्रसारण के लिए समुद्र के बारे में लिखने का काम सौंपा गया.

पर उसने "स्थिति को संभाल लिया."

बॉस ने रेचल का लंबा आलेख पढ़ा और फिर उसे वापस सौंप दिया.

उसने आँखों में चमक के साथ कहा, "मुझे नहीं लगता कि यह चलेगा. आप फिर से बेहतर प्रयास करें. लेकिन इसे 'अटलांटिक' को भेजे दें."

Atlantic

रेचल ने सलाह मानी.

जब पत्रिका ने "अंडरसी" (समुद्र के नीचे) लेख छापा,
तो उसके बाद एक प्रकाशक के संपादक ने रेचल से संपर्क किया.

आम पाठकों के लिए आप समुद्र के बारे में एक पुस्तक क्यों नहीं लिखती हैं?

1941 में रेचल ने अपनी पहली पुस्तक, "अंडर द सी-विंड: ए नेचुरलिस्ट्स पिक्चर ऑफ ओशन लाइफ" प्रकाशित की. उसी समय पर्ल हार्बर पर बमबारी हुई और अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध में अपनी भागीदारी शुरू की थी.

उस किताब पर किसी का ध्यान नहीं गया - और जल्द ही पुस्तक,
किताबों की दुकानों से लुप्त हो गई.

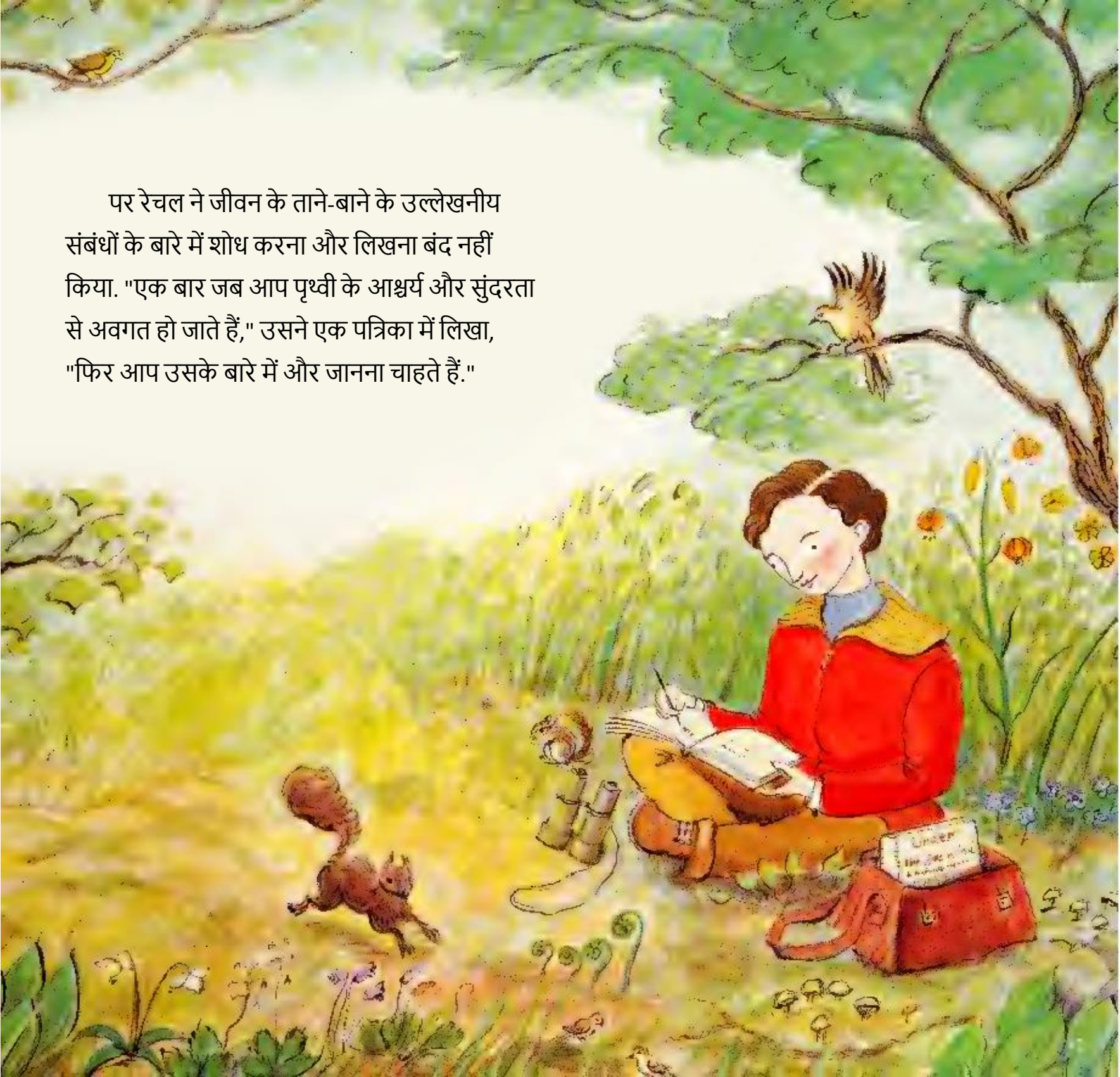

पर रेचल ने जीवन के ताने-बाने के उल्लेखनीय संबंधों के बारे में शोध करना और लिखना बंद नहीं किया. "एक बार जब आप पृथ्वी के आश्चर्य और सुंदरता से अवगत हो जाते हैं," उसने एक पत्रिका में लिखा, "फिर आप उसके बारे में और जानना चाहते हैं."

पंद्रह वर्षों तक एक जीव-विज्ञानी की हैसियत से रेचल उन स्थानों पर गई जहाँ बहुत कम महिलायें कभी गई होंगी.

उसने महिलाओं के कार्य भी किए : नोवा स्कोटिया के दक्षिण में धूमिल, खतरनाक धाराओं में गहरे समुद्र में मछलियां गिनीं; फ्लोरिडा तट पर एक चौरासी पौंड के डाइविंग हेलमेट और विशेष सूट में रीफ जानवरों का अवलोकन किया; दलदली फ्लोरिडा एवरग्लेड्स में "ग्लेड्स बग्गी" पर सवारी करके मगरमच्छों को ट्रैक किया.

इस बीच वो शाम के समय या सप्ताह के अंत में अपने लेखन पर काम करती थी.

वो परेशान करने वाली प्रवृत्तियों को नोटिस करने लगी. जीवन के जाल का क्या होगा जब मनुष्य अधिक-से-अधिक कचरा समुद्र में फेंकेंगे? समुद्र का बढ़ता तापमान वहां के जीवित प्राणियों को कैसे प्रभावित करेगा?

1951 में उन्होंने एक बेस्ट सेलर पुस्तक, "द सी अराउंड अस" (हमारे आसपास का समुद्र) प्रकाशित की. एक साल बाद उन्होंने पूर्णकालिक लेखन के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी.

अगले तीन वर्षों तक उसने "द एज ऑफ़ द सी" पर शोध किया और उसे लिखा.

अब वो इतनी प्रसिद्ध हो गईं थीं कि लोग लिफ्ट, ब्यूटी पार्लर, टैक्सी कैब और रेस्तरां में उनसे ऑटोग्राफ की मांग कर रहे थे.

रेचल ने कभी शादी नहीं की.

न केवल वो घर में अकेली कमाने वाली थीं, बल्कि वो परिवार के कई सदस्य जो बेरोजगार, बीमार या मर रहे थे उनकी देखभाल भी करती थीं.

पचास साल की उम्र में रेचल ने अपनी भतीजी के पांच वर्षीय बेटे रोजर को गोद लिया.

फिर उन्हें उस युवा शैतान लड़के की देखभाल करने और लिखने के लिए समय निकालने की चुनौती का सामना करना पड़ा.

हमेशा की तरह, रेचल को घर के बाहर प्रकृति की गोद में ही सकून और चैन मिलता था.

उन्होंने मेन नदी के तट के पास कुछ एकड़ जमीन खरीदी और वहां एक ग्रीष्मकालीन कुटिया बनाई.

"वो जगह एक खजाना है," रेचल कहती थी.

दिन के समय में वो गहरे, काले पेड़ों के बीच काई और फर्न का निरीक्षण करने के लिए रोजर के साथ घूमती थी.

रात में कम ज्वार-भाटे के दौरान, वो एक टॉर्च लेकर अकेले चट्टानी किनारे पर चली जाती थी.

उसने अपनी पैंट की स्लीव को मोड़कर पेट के बल छिछले पानी में लोटती थी और वहां पर बड़े केकड़ों, स्टार-फिश और एनीमोन खोजती थी.

1958 में रेचल ने एक मुश्किल नई परियोजना शुरू की.

जब द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ उसके बाद अमरीका में रासायनिक उद्योग बहुत शक्तिशाली हो गया था.

कीड़ों को मारने के लिए रसायनों का भारी छिड़काव नियमित रूप से पार्कों और प्राकृतिक जंगलों में किया जाने लगा. यहां तक कि स्विमिंग पूल और भीड़-भाड़ वाली शहर की सड़कों पर भी रसायनों का भारी छिड़काव होने लगा.

1945 की शुरुआत में, रेचल ने देश भर में पक्षियों की घटती आबादी के बारे में पढ़ा.

हर साल शोधकर्ताओं ने कम घोंसलोंऔर कम होते प्रवासी पक्षियों की सूचना दी.

रेचल ने जितनी अधिक छानबीन की, वो आंकड़ों से उतनी ही अधिक चिंतित होती गई.

कीटनाशक पक्षियों, कीड़ों, मछलियों और अन्य जानवरों के लिए घातक थे.

और लोगों पर उनका असर?

किसी ने भी इन बड़े व्यवसायों, रासायनों को मंजूरी देने वाली एजेंसियों, या रसायनों के प्रभावों के बारे में घटिया शोध करने वाले विश्वविद्यालयों के खिलाफ अपनी आवाज़ नहीं उठाई थी.

रेचल को पता था कि वो खतरनाक क्षेत्र में पैर रख रही थीं.

पर क्योंकि उनका उद्योग, सरकार या किसी विश्वविद्यालय से कोई संबंध नहीं था,
इसलिए उन्हें लगा कि वो अधिक स्वतंत्र रूप से तथ्य एकत्र कर सकती थीं.

उन्हें लगा की जो वो लिखेगी उसे लोग पढ़ेंगे और फिर वे
साफ़ हवा, स्वच्छ पानी की मांग के लिए संघर्ष करेंगे.

DDT
DDT

केवल रेचल के सबसे करीबी दोस्त ही जानते थे कि रेचल उस समय सख्त बीमार थी. ।960 में उसे स्तन कैंसर हो गया था. उसकी किताब "साइलेंट स्प्रिंग" में कुछ ऐसा था जिसमें वो बेहद गहराई से विश्वास करती थी, "मुश्किलों के बावजूद मैंने कभी भी पीछे मुड़ने की नहीं सोची." उन्होंने "साइलेंट स्प्रिंग" को पूरा करने के लिए चार साल तक अथक परिश्रम किया.

कीटनाशकों के बारे में उनका सावधानीपूर्वक शोध धीमी गति से आगे बढ़ा.

उनका लेखन और पुनर्लेखन और भी धीमे चला .

वो एक ऐसी किताब लिखा चाहती थीं, जिसे हर आम व्यक्ति समझ सके - सिर्फ वैज्ञानिक ही नहीं.

बीमारी और थकान से ग्रसित होने के बावजूद उन्होंने हार मानने से इनकार किया. "मैं फिर कभी भी एक थ्रश का गीत को खुशी से नहीं सुन सकूंगी," रेचल ने कहा, "अगर मैंने वो सब नहीं किया होता जो मैं कर सकती थी."

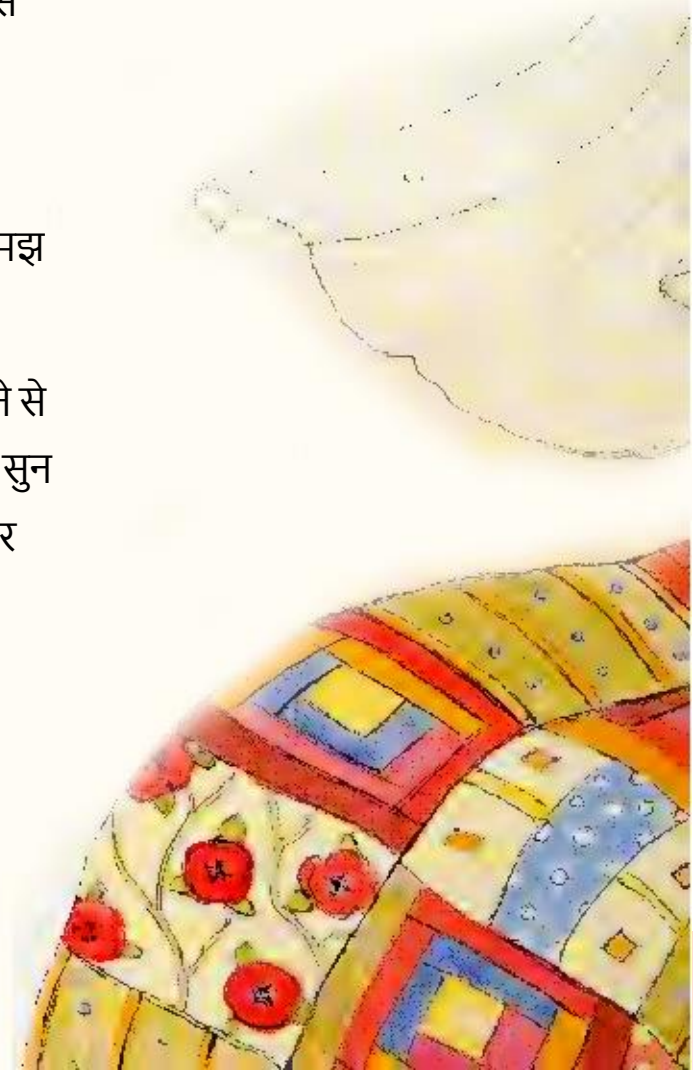

1962 में "साइलेंट स्प्रिंग" प्रकाशित हुई और एक बेस्ट सेलर बन गई.

इस पुस्तक के प्रकाशन ने रासायनिक उद्योग को आग बबूला कर दिया.

कांग्रेस ने सुनवाई की.

उसके बाद जांच-पड़ताल हुई.

नए कानून लिखे गए, रेचल की किताब से प्रेरित होकर बहुत सारे सामान्य लोगों ने तमाम सकारात्मक काम किए. लेकिन रेचल उन पर्यावरणीय परिवर्तनों को देखने के लिए जीवित नहीं रहीं.

14 अप्रैल, 1964 को, पक्षियों के गीत से भरे शुरुआती वसंत सूर्यास्त से ठीक पहले, छप्पन वर्षीय रेचल की मृत्यु हो गई.

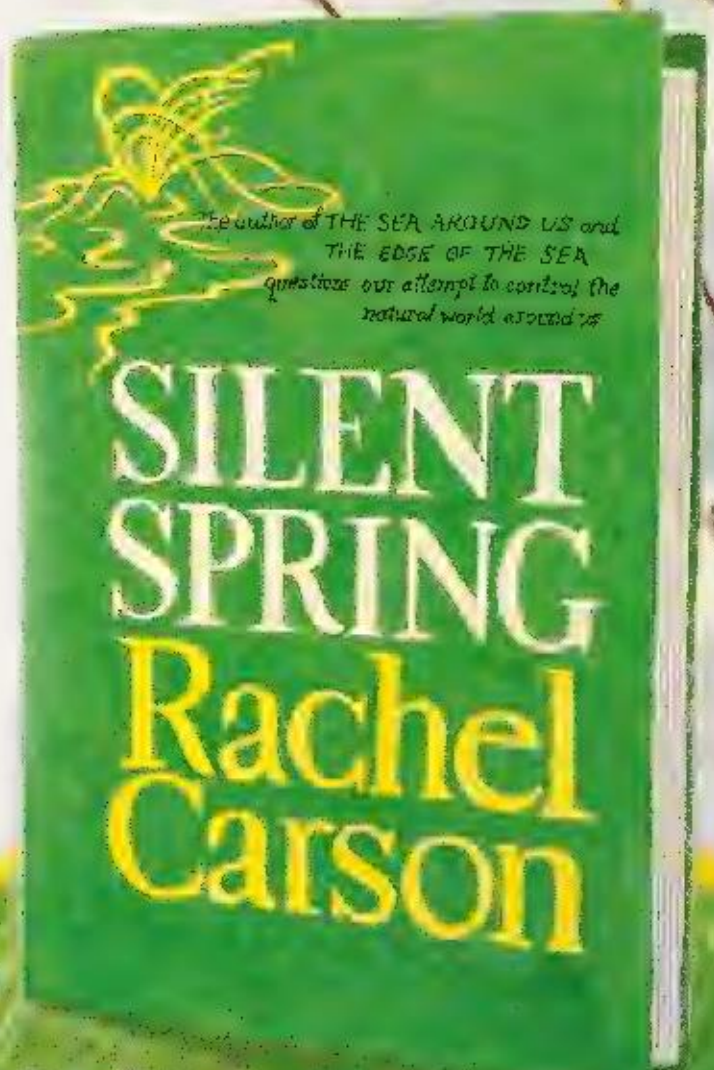

"साइलेंट स्प्रिंग" के प्रकाशन के बाद क्या हुआ?

"साइलेंट स्प्रिंग" का शक्तिशाली शीर्षक वसंत में पक्षियों के कलरव के शांत होने की छवि से आया था. द न्यू यॉर्कर ने 16 जून, 1962 से "साइलेंट स्प्रिंग" के अग्रिम अंश मुद्रित किए, और ह्यूटन मिफ्लिन ने सितंबर 27 को इस पुस्तक को प्रकाशित किया. लगभग तुरंत ही, एक प्रमुख रासायनिक कंपनी ने प्रकाशन को रोकने के लिए द न्यू यॉर्कर और ह्यूटन मिफ्लिन पर मुकदमा करने की धमकी दी. पर न तो पत्रिका और न ही पुस्तक प्रकाशक ने अपने घुटने टेके. उसके बाद रासायनिक उद्योग ने पुस्तक पर एक ज़ोरदार हमला किया .

पर उसके बावजूद "साइलेंट स्प्रिंग" तुरंत एक बेस्ट सेलर बन गई.

रासायनिक उद्योग और कई सरकारी एजेंसियों ने "साइलेंट स्प्रिंग" और रेचल कार्सन के खिलाफ एक शातिर, वित्त पोषित और दूषित अभियान चलाया, जिसमें रेचल को "एक उन्मादी महिला" कहा गया, जो "शायद एक कम्युनिस्ट" थी. एक पूर्व कृषि सचिव ने राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर को पत्र लिखा और पूछा कि "एक बिना बच्चों वाली कुंवारी महिला, जेनेटिक्स के बारे में भला क्यों इतनी चिंतित थी." एक आलोचक ने उनकी पुस्तक को "इमोशनल एंड अलार्मिस्ट" करार दिया और कार्सन को "ऑर्गेनिक-गार्डिंग फ़ैडिस्ट्स" और "अतिवादी" और गलत सूचना फैलाने वाले समूह का हिस्सा करार दिया.

आखिरकार, कार्सन की जीत हुई.

सार्वजनिक आक्रोश ने कांग्रेस, कृषि और आंतरिक विभाग, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा और खाद्य एवं औषधि प्रशासन को अपने पत्रों से लाद दिया. समाचार पत्र और पत्रिकाएँ तीखे संपादकीय और पत्र छापते रहे. अगस्त 1962 में, राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी ने कीटनाशकों के उपयोग की जांच के लिए राष्ट्रपति की विज्ञान सलाहकार समिति का एक विशेष पैनल नियुक्त किया. उनकी प्रकाशित रिपोर्ट ने रासायनिक उद्योग और सरकारी एजेंसियों की आलोचना की. कार्सन ने अप्रैल 1963 में सीबीएस पर अपने विशेष साक्षात्कार में सीधे टेलीविजन पर दर्शकों के लिए अपनी चेतावनी प्रस्तुत की. पर्यावरणीय खतरों पर एक सीनेट समिति ने कार्सन की तत्काल गवाही को दो महीने बाद प्रसारित किया.

इस बीच, "साइलेंट स्प्रिंग" ग्रेट ब्रिटेन में भी बेस्ट सेलर बन गई. वो पुस्तक फ्रांस, जर्मनी, इटली, डेनमार्क, स्वीडन, नॉरवे, हॉलैंड, स्पेन, ब्राजील, जापान में भी प्रकाशित हुई. आइसलैंड, पुर्तगाल और इज़राइल में पुस्तक को सम्मान और पुरस्कार मिले. मार्च 1963 में, रेचल कार्सन को राष्ट्रीय वन्यजीव महासंघ द्वारा वर्ष का संरक्षणवादी नामित किया गया. उन्हें अमेरिका के इसाक वाल्टन लीग का संरक्षण पुरस्कार, नेशनल ऑडबोन सोसाइटी का ऑडबोन मेडल, और अमेरिकन ज्योग्राफिकल सोसाइटी से कुल्लम मेडल भी मिला. कार्सन, अमेरिकन एकेडमी ऑफ आर्ट्स एंड लेटर्स के लिए चुनी गईं - जहाँ सिर्फ चार महिलाओं में वो एक थीं.

गंभीर पर्यावरणीय खतरों से निपटने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है. साथ ही, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कैसे वाक्पटुता से व्यक्त किया गया एक सच दुनिया को बदलने की शक्ति रखता है. "साइलेंट स्प्रिंग" के प्रकाशन के बाद के वर्षों ने, जमीनी-स्तर के पर्यावरण समूहों और अन्य स्थानीय नागरिकों को पर्यावरण की रक्षा करने वाले संघीय कानूनों को पारित करने के लिए प्रेरित किया.

अदालत में लंबी लड़ाई के बाद, 1972 में डीडीटी के व्यापक उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया. कार्सन के आधारभूत कार्य और निरंतर शोध ने साबित किया कि डीडीटी का पक्षी प्रजनन पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता था.

"साइलेंट स्प्रिंग" ने न केवल कई पक्षी प्रजातियों को बचाया; उसने लाखों लोगों के दिमाग को खोला और उन्हें एक नई अवधारणा से अवगत कराया - हम हवा, पानी और मिट्टी के साथ जो कुछ करते हैं, उसका सीधा असर हम पर, आने वाली पीढ़ियों पर, और धरती पर रहने वाले जानवरों और पौधों पर पड़ता है. रेचल कार्सन ने यह भी दिखाया कि एक प्रतिबद्ध व्यक्ति कैसे बदलाव ला सकता है. जैसा कि पूर्व उपराष्ट्रपति अल गोर, जो वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग के मुद्दों पर काम करते हैं, ने कहा, "साइलेंट स्प्रिंग पुस्तक एक व्यथित क्रंदन के रूप में आई, उसमें गहराई थी, बढ़िया शोध था, और वो शानदार ढंग से लिखी गई थी. उस पुस्तक के तर्क ने इतिहास के पाठ्यक्रम को बदल दिया. साइलेंट स्प्रिंग के बिना, पर्यावरण आंदोलन लंबे समय से टल सकता था या शायद वो फिर कभी विकसित भी नहीं होता."